ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580 |

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 2, February 2019

वैशेषिक दर्शन के प्रसिद्ध आचार्य एवं परम्परा

[1]श्रीमती बृजलता, [2]डॉ. चन्दनलाल पाराशर

[1]शोधकत्री, कु.मु हिंदी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ, डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश

[2]प्रभारी/अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, कु.मु हिंदी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ, डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश

सार

वैशेषिक दर्शन के आदि प्रवर्तक ऋषि कणाद हैं। यह 'कणभुक्', 'कणभक्ष' इत्यादि नामों से भी ग्रंथों में प्रसिद्ध हैं। त्रिकाण्डशेष कोष में इन का नाम 'काश्यप' भी कहा है। कणाद कश्यप के पुत्र थे ऐसा किरणावली में लिखा है। एक नाम इन का 'औलूक्य' भी है। इस से इन को लोग उलूक ऋषि का पुत्र बतलाते हैं। ये उलूक मुनि विश्वामित्र के पुत्र थे यह महाभारत अनुशासन पर्व ४ अध्याय में लिखा है। वायु पुराण, पूर्वखण्ड, २३ अध्याय में कणाद के प्रसङ्ग में लिखा है कि वे सत्ताइसवीं चौयुगी में प्रभास क्षेत्र में शिव जी के अवतार सोमशर्मा नाम ब्राह्मण के शिष्य थे। इस से ऐसा मालूम होता है कि कश्यप गोत्र में, विश्वामित्र के पुत्र उलूक के पुत्र, सोमशर्मा के शिष्य कणाद रहे। इन के सूत्र 'कणाद सूत्र', 'वैशेषिक दर्शन' इत्यादि नाम से प्रसिद्ध हैं। जैसे एक एक सूत्र की टीका रूप से 'भाष्य' और सूत्रों के हैं वैसा भाष्य वैशेषिक सूत्रों का कोई अब तक उपलब्ध नहीं है। प्रशस्त पाद की टीका 'भाष्य' कर के प्रसिद्ध है। पर इस ग्रन्थ के देखने से मालूम होता है कि यह सूत्रों की टीका नहीं है। सूत्रों के क्रम तक को इस में नहीं स्वीकार किया है। सूत्रों के आधार पर यह एक स्वतंत्र ही ग्रन्थ है। इस को 'भाष्य' कहना ठीक नहीं। पर सूत्रों को छोड़ कर यही ग्रन्थ वैशेषिक विषय पर सब से प्राचीन अब तक मिला है इस से इस को लोगों ने 'भाष्य' मान लिया है। प्रशस्तपाद ने अपने ग्रन्थ का नाम भी 'भाष्य' नहीं रक्खा-इस कानाम 'पदार्थधर्मसंग्रह' प्रथम श्लोक में कहा है। इस पर टीका जो 'न्यायकन्दली' नाम से प्रसिद्ध है उस में कहीं 'भाष्य' नाम से इस ग्रन्थ को नहीं कहा है। न्यायकन्दली की केवल एक पुस्तक पाई गई है जिस में मूलग्रन्थ को 'भाष्य' कहा है। फिर प्रशस्तपाद के ग्रन्थ की टीका-किरणावली-में लिखा है कि प्रशस्तपाद ने इस पदार्थधर्मसंग्रह को लिखा—'क्योंकि [२]भाष्य बहुत बड़ा ग्रन्थ है। इस पर पद्मनाभ मिश्र टीकाकार ने लिखा है कि 'यह भाष्य रावण का किया है'। इस रावण कृत भाष्य की चर्चा वेदान्त भाग्य की रत्नप्रभा टीका में भी पाई जाती है। फिर भाष्य के लक्षण भी इस ग्रन्थ में नहीं पाए जाते। सूत्रों के अनुसार जिस में सूत्र पदों का अर्थ हो उसी को भाष्य कहते हैं। प्रशस्तपाद भाष्य की भूमिका में जिस तरह यह लक्षण इस ग्रंथ में लगाया गया सो मन में नहीं बैठता। फिर जब एक बड़ा 'भाष्य' दूसरा है–ऐसा किरणावली ऐसे प्राचीन ग्रंथ के लेख से स्पष्ट मालूम होता है–तब इस ग्रन्थ को भाष्य कहने का आग्रह ही क्यों? भाष्य ही होने से ग्रंथ प्राचीन नहीं होता। बिना भाष्य हुए भी यह ग्रंथ भाष्यों से प्राचीन हो सकता है। परन्तु वर्धमान उपाध्याय न्यायनिबन्धप्रकाश में–'सूत्रं बुद्धिस्थीकृत्य तत्पाठनियमं'–बिना तद्न्याख्यानं भाष्यम्–ऐसा लक्षण करके प्रशस्त-पाद के ग्रंथ को 'भाष्य' बतलाया है।

प्रशस्तपाद के ग्रंथ पर किरणावली और न्यायकंदली दो टीकायें प्रसिद्ध हैं। सूत्रों पर टीका, शंकर मिश्र का उपस्कार आज कल उपलब्ध है। सूत्रों पर इस से प्राचीन कोई टीका अभी नहीं मिली है। सूत्रों पर एक वृत्ति भारद्वाज मुनि की की हुई है। सम्भव है यह 'भारद्वाज' न्यायवार्तिककार उद्योतकर ही हों। यह वृत्ति प्रायः प्रशस्तपाद के भाष्य से अधिक प्राचीन है। पर इस की पोथियां नहीं मिलतीं। एक आध प्रति बनारस में है।

प्रकरणग्रंथ इस दर्शन के अनेक हैं। सप्तपदार्थी तर्कसंग्रह तर्कामृत-चपक-तर्ककौमुदी-मुक्तावली-इत्यादि।

परिचय

वैशेषिकों का परमाणुवाद-परमाणु से सृष्टि होती है सो मत– और शब्द अनित्य है–यह मत मीमांसक और वेदान्तियों को नास्तिकता से मालूम पड़े। इस से वैशेषिकों को कुमारिल ने बौद्धों के समान नास्तिक (अर्थात् वेदनिन्दक) बतलाया है और शंकराचार्य ने इन को 'अर्धवैनाशिक'–आधा बौद्ध–कहा है। परन्तु प्रशस्तपाद ने ग्रन्थ के आरम्भ में महादेव को नमस्कार किया है–और 'महेश्वर की इच्छा से सृष्टि होती है' यह स्पष्ट लिखा है। इस से इन को नास्तिक कहना ठीक नहीं मालूम होता।[5,6]

गौतम ने न्याय सूत्रों में दो वादी प्रतिवादी के बीच शास्त्रार्थ रूप से अपने शास्त्र को रचा है—उसी के अनुकूल उन्होंने अपने सोलह पदार्थों का निरूपण किया है। इसीसे न्याय सूत्रों में फजूल बातों का विचार घुसेड़ दिया है ऐसा लोग आक्षेप करते हैं। वैशेषिक सूत्रों में यह बात नहीं है। इस में आरम्भ ही से मोक्ष कैसे होता है इसी का विचार किया है।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580 |

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 2, February 2019

कणाद ने पहिले सूत्र में प्रतिज्ञा की है कि मैं 'धर्म की व्याख्या करता हूं' अर्थात् धर्म क्या वस्तु है सो समझाऊंगा। धर्म का विचार आवश्यक है क्योंकि बिना धर्म के पदार्थों का ज्ञान नहीं हो सकता। दूसरे सूत्र में धर्म का लक्षण कहा है—'जिस से पदार्थों का तत्त्वज्ञान होने पर मोक्ष होता है वही धर्म है'। अर्थात् धर्म से पदाथों का ज्ञान होता है और तत्त्वज्ञान से मोक्ष होता है। यह धर्म कौन सी वस्तु है जिससे तत्त्वज्ञान होता है? काम्य कर्मों से निवृत्ति और नित्य कर्मों का अनुष्ठान—इत्यादि जो वेद में कहे हैं वही धर्म है।

वह कौन सा 'तत्वज्ञान' है जिस से मोक्ष होता है? चौथे सूत्र में कहा है कि द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, ये छओ पदार्थ क्या हैं—इन का क्या लक्षण है—कौन से लक्षण किन किन पदार्थों में हैं—इन में से किन में क्या साधर्म्य है क्या वैधर्म्य है—इत्यादि के ज्ञान को 'तत्वज्ञान' कहते हैं। और इसी तत्वज्ञान से निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष होता है।

यहां पदार्थ छही कहे हैं। प्राचीन वैशेषिक ग्रन्थों में ये ही छ हैं। सप्त पदार्थों में पहिले सातवां पदार्थ 'अभाव' माना है।

ये द्रव्यादि पदार्थ कौन से हैं, इनके लक्षण—साधर्म्य वैधर्म्य, क्या हैं इत्यादि विचार पांचवें सूत्र से लेकर अन्त तक किया है।

द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय येही पदार्थ सूत्र (१.१.४) में कहे हैं। प्रशस्तपाद ने भी येही छ पदार्थ कहे हैं। 'पदार्थ' उसको कहते हैं जिसका ज्ञान हो सके। इससे जितनी चीजें संसार में हैं सभी 'पदार्थ' कहलाती हैं। वे कुल चीजें इन्हीं छओं के अन्तर्गत हैं। इन छओं से बाहर कोई भी चीज नहीं हो सकती। ये छ 'भाव' पदार्थ हैं और हर एक वस्तु अपने विपरीत को सूचित [४]करती है। इस से इन पदार्थों के विपरीत एक पदार्थ 'अभाव' नवीन वैशेषिकों ने मान लिया है। जितनी चीजों का ज्ञान होता है वे क्या भावरूप हैं या अभावरूप। भावरूप जितनी हैं वे क्या द्रव्य हैं वा गुण वा कर्म वा सामान्य वा विशेष वा समवाय। पदार्थों के साधर्म्य वैधर्म्य ज्ञान से यह मतलब है कि इसी तरह कुल पदार्थों के यथार्थ लक्षण का ज्ञान हो सकता है। कौन कौन गुण किन किन पदार्थों में है इस के जानने ही से पदार्थों का तत्वज्ञान होता है। इसी से प्रशस्तपाद भाष्य से लेकर मुक्तावली पर्यन्त सब वैशेषिक ग्रन्थों में पहिले पदार्थों के साधर्म्य का विचार कर के फिर वैधर्म्य का विचार किया है। वैधर्म्य के विचार ही से एक एक कर सब पदार्थों के स्वरूप का ज्ञान हो जाता है।

अब इन पदार्थों के परस्पर साधर्म्य वैधर्म्य का विचार करना आवश्यक है। पहिले साधर्म्य का विचार किया गया है, अर्थात् कौन कौन सी चीजें एक तरह की समझी जा सकती हैं। इसके बाद इन सभों के वैधर्म्य का विचार होगा; अर्थात् एक एक करके इन के क्या लक्षण हैं, क्या स्वभाव हैं, इत्यादि बातों पर विचार होगा।

छओं पदार्थों का साधर्म्य यही है कि ये सब वर्तमान हैं-शब्दों से कहे जा सकते हैं और इनका ज्ञान हो सकता है।

नित्य द्रव्यों को छोड़ कर और जितनी चीजें हैं उन सभों का यह साधर्म्य है कि वे आश्रित हैं, अर्थात् किसी आधार पर रहती हैं।

द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष-इन पांचों का यही साधर्म्य है कि ये अनेक हैं और द्रव्यों के साथ इनका नित्य सम्बन्ध रहता है।

गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, इन पाँचों का साधर्म्य है कि इन के कोई गुण या कर्म नहीं हैं।

द्रव्य, गुण, कर्म, इन तीनों का साधर्म्य है कि इन में सत्ता रहती है-इन के सामान्य (जातियाँ) होती हैं, इन के विशेष भी होते हैं और धर्म अधर्म के कारण होते हैं।

सभी रहती हैं इस का यह तात्पर्य नहीं है कि ये वर्तमान हैं, तात्पर्य यह है कि 'सत्ता' इन में जाति रहती है अर्थात् 'सत्ता' जो एक जाति है उस में द्रव्य, गुण, कर्म अन्तर्गत हैं। और पदार्थ यद्यपि [५]वर्तमान या सत् है तथापि उनमें 'सत्ता' जाति हैं ऐसा नहीं कह सकते। क्योंकि द्रव्य, गुण और कर्म इन्हीं तीन पदार्थों में सामान्य या जाति रह सकती है।

जितनी वस्तुओं के कारण हैं वे सब कार्य हैं और अनित्य हैं, यही इन का साधर्म्य है।

परमाणु के परिमाण को छोड़ कर और जितनी चीजें हैं इन सभों में यही साधर्म्य है कि ये कारण हो सकती हैं।

सामान्य, विशेष और समवाय, इन तीनों का साधर्म्य यह है कि इनका विकार नहीं होता। अपने अपने रूप से ये सदा बने रहते हैं। बुद्धि ही से केवल इनका ज्ञान हो सकता है, इन्द्रियादि से नहीं, ये कार्य नहीं होते, कारण नहीं होते। इन का सामान्य या विशेष नहीं होता, ये नित्य हैं।

द्रव्य गुण का साधर्म्य है कि दोनों अपनी सजातीय वस्तु उत्पन्न करते हैं।

पृथिवी, जल, तेज (अग्नि), वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन ये नव 'द्रव्य' कहलाते हैं। गुणों का आधार जो हो सकै, जिस में गुण का आधार होने की सामर्थ्य हो, वही 'द्रव्य' कहलाता है। और पृथिव्यादि जो नौ चीजें हैं उन्हीं में गुण रह सकते हैं। इन से अलग कोई गुण कहीं भी नहीं रह सकता है। इस से इन नवों चीजों में यही साधर्म्य है कि ये गुणों के आधार हो सकती हैं—अर्थात्

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580 |

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 2, February 2019

द्रव्य हैं। इन नवों के और साधर्म्य ये हैं कि इन का विकार होता है, इन के गुण हैं, कार्य या कारण से इन का नाश नहीं होता और इन में अन्त्य विशेष होते हैं।

अवयव वाले द्रव्यों को छोड़ कर और जितने द्रव्य हैं उन का यह साधर्म्य हैं कि ये किसी आधार पर नहीं रहते और नित्य हैं।

पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आत्मा और मन का यह साधर्म्य है कि ये अनेक हैं और इन की पर अपर दोनों तरह की जाति होती है।

पृथिवी, अग्नि, जल, वायु और मन का यह साधर्म्य है कि इन में क्रिया होती है—ये मूर्त हैं अर्थात् स्थूल मूर्तिवाले हैं। इनमें परत्व अपरत्व और वेग है।[६]

आकाश, काल, दिक्, आत्मा, इन का साधर्म्य यह है कि ये सर्वव्यापी हैं—इनका परिमाण परम है, ये इतने बड़े हैं कि जिस से बड़ा दूसरा नहीं हो सकता।

पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश इनका साधर्म्य है कि ये भूत है—एक एक बाह्य इन्द्रिय से ग्राह्य हैं। और इन्द्रियां इन्हीं के विकार हैं।

पृथिवी, जल, वायु, अग्नि इनका साधर्म्य है कि इनका स्पर्श होता है और ये ही समवाय कारण होते हैं।

पृथिवी, जल, अग्नि, का साधर्म्य है कि ये प्रत्यक्ष है, इन में रूप और द्रवत्व है।

पृथिवी, जल का साधर्म्य है कि इन्हीं में गुरुत्व और रस है।

पृथिव्यादि पांचों भूत और आत्मा, इनका साधर्म्य है कि इनके विशेष गुण होते हैं।

आकाश और आत्मा का साधर्म्य, हैं कि इनके जितने विशेष गुण हैं सब क्षणिक हैं और इनके एक एक अंशों ही में ये गुण रहते हैं।

दिक्, काल का साधर्म्य है कि कुल कार्यों के ये निमित्त कारण होते हैं।

पृथिवी, अग्नि का साधर्म्य है कि इनके नौमित्तिक द्रवत्व है।

रूप, रस, गन्ध,स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, अदृष्ट और शब्द—ये २४ 'गुण' हैं अर्थात् ये चौबीस द्रव्यों में रहते हैं और इनका स्वयं कोई कर्म नहीं है। यही इनका साधर्म्य है।

उत्क्षेपण (ऊपर फेकना)—अपक्षेपण (नीचे फेकना)—आकुंचन (सकोड़ना)—प्रसारण (फैलाना) और गमन (जाना या चलना), ये पांच 'कर्म' हैं। कर्म वही है जिस से दो वस्तुओं का संयोग उत्पन्न होता है। इस से पांच कर्म जो गिनाये हैं उनका साधर्म्य यही है कि ये संयोग उत्पन्न करते हैं। घूमना-बहना-जलना-गिरना इत्यादि जितनी क्रियायें हैं वे सब 'गमन' के अन्तर्गत हैं। [७]

पर और अपर ये दो 'सामान्य' हैं—सामान्य उसको कहते हैं जो नित्य है, एक है, और अनेक वस्तु में एक काल में रहता है। अर्थात् जिसके द्वारा अनेक वस्तुओं का एक ज्ञान हो सकता है। इस से यहीं पर अपर का साधर्म्य हुआ।

'विशेष' वे हैं जिनके द्वारा नित्य द्रव्य में विभेद होता है। अर्थात् जिनके द्वारा भिन्न भिन्न परमाणु का भिन्न भिन्न ज्ञान उत्पन्न होता है। जितने नित्य द्रव्य हैं उतने ही विशेष भी हैं। इनका यही साधर्म्य है कि ये नित्य द्रव्यों में रहते हैं और भिन्न भिन्न व्यक्ति को भिन्न भिन्न ज्ञान उत्पन्न करते हैं।

जो चीजें कभी एक दूसरे से अलग नहीं पाई जातीं और जो एक दूसरे का आधार होती हैं—इनका जो यह नित्य सम्बन्ध है उस को 'समवाय' कहते हैं। जितने ऐसे सम्बन्ध हैं उनका यही साधर्म्य है कि वे 'समवाय' अर्थात् नित्य सम्बन्ध हैं।[3,4]

पदार्थों के साधर्म्य यों हैं। अब इनके वैधर्म्य का विचार करते है। अर्थात् किस पदार्थ में क्या खास गुण है क्या खास लक्षण है जिस से वह और पदार्थों से भिन्न समझा जाता है, यह एक एक पदार्थ को लेकर निरूपण करेंगे।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580 |

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 2, February 2019

द्रव्य।

पदार्थों में सब से पहिले 'द्रव्य' कहा है। और पदार्थों से द्रव्य का वैधर्म्य यही है कि यह गुणों का और कर्मों का आश्रय होता है और यही समवायि कारण होता है। (सूत्र १.१.१५)। द्रव्य नव हैं—पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन।

पृथिवी।

पृथिवी का वैधर्म्य है गन्ध—अर्थात् गन्ध एक ऐसा गुण है जो केवल पृथिवी में रहता है और किसी द्रव्य में नहीं (सू. २.२.२)। इस के अतिरिक्त और गुण पृथिवी में ऐसे भी हैं जो और द्रव्यों में [८]भी हैं, जैसे रूप, रस, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रवत्य, संस्कार। सूत्र में (२.१.१.) 'रूप-रस-गंध-स्पर्शवती पृथिवी' ऐसा ही कहा है—पर भाष्य में ये चौदहों कहे हैं। रूप पृथिवी के शुक्ल आदि अनेक होते हैं। रस छः प्रकार के हैं—मीठा, खट्टा, लवण, कड़आ, तीता, कषाय। गंध दो प्रकार का है—सुगंध और दुर्गन्ध। स्पर्श इसका असल में न ठंढा ही है न गरम—परन्तु अग्नि के संयोग से बदलता रहता है।

पृथिवी दो प्रकार से संसार में पाई जाती है। नित्य और अनित्य। परमाणुरूप से नित्य और कार्य-स्थूल-वस्तु रूप से अनित्य। कार्य रूप पृथिवी से बनी हुई स्थूल चीज़ तीन प्रकार की होती है। शरीर, इन्द्रिय और विषय। आत्मा का भोगायतन—जिस आधार में रह कर आत्मा को सुख दुःख का भोग होता है उसको 'शरीर' कहते हैं। शरीर दो प्रकार के होते हैं—योनिज और अयोनिज। अयोनिज शरीर देवताओं और ऋषियों के होते हैं—इनके शरीर की उत्पत्ति में शुक्र शोणित संयोग की अपेक्षा नहीं होती। इनके धर्म का पृथिवी-परमाणुओं पर असर ऐसा पड़ता है कि इनके शरीर उत्पन्न हो जाते हैं। इसी तरह क्षुद्र कीड़े खटमल इत्यादि के शरीर भी बिना शुक्र शोणित संयोग ही के उत्पन्न होते हैं—केवल उनके अधर्म का असर पृथिवी परमाणुओं पर पड़ने से। शुक्र शोणित के मिलने से जो शरीर उत्पन्न होता है वही योनिज है। ये दो तरह के होते हैं। जरायुज, जैसे मनुष्यादि शरीर और अण्डज जैसे पक्षियों के शरीर।

जिस से संयुक्त होकर मन आत्मा का संयोग पाकर प्रत्यक्ष ज्ञान को उत्पन्न करता है उसी को इन्द्रिय कहते हैं। वैशेषिकों का मत है कि प्रत्यक्ष ज्ञान में जिस विषय का ज्ञान होता है उस का संयोग इन्द्रिय से होता है। फिर मन का संयोग उस इन्द्रिय से होता है, तब मन का संयोग आत्मा से होता है—तदनन्तर इस आत्मा में उस विषय का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। इसीसे न्यायकंदली में (पृ° ३२) आत्मा के प्रत्यक्ष ज्ञान का जो साधन या कारण है उसी को 'इन्द्रिय' कहा है। पृथिवी का बना हुआ इन्द्रिय वह है जिस से गन्ध का ग्रहण होता है—अर्थात् घ्राणेन्द्रिय—नाक।

विचार-विमर्श

वैशेषिक दर्शन का न्याय से गहरा संबंध है । ये दोनों दर्शन भारतीय विचारधारा के एक ही रूढ़िवादी स्कूल से संबंधित हैं। चार्वाक , बौद्ध और जैन के विपरीत , वैशेषिक का दर्शन आस्तिक विचारों को कायम रखता है। वैशेषिक इसलिए कहलाते हैं क्योंकि वे विशेष नामक एक विशेष श्रेणी को स्वीकार करते हैं । संस्कृत में ' विशेष ' शब्द का प्रयोग किसी असामान्य को दर्शाने के लिए किया जाता है। ऋषि कणाद इस प्रणाली के संस्थापक हैं । पहले चार तत्वों अर्थात् पृथ्वी , जल , प्रकाश और वायु के बीच अंतर जानने में कोई कठिनाई नहीं है । परन्तु कणाद ने ही इस तथ्य को जाना कि कुछ ऐसी विशिष्टता है जो नित्य पदार्थों को पृथक करती है । आकाश , समय, स्थान, आत्मा और मन शाश्वत पदार्थ हैं। प्रथम चार तत्वों के परमाणु शाश्वत हैं। यद्यपि कणाद परमाणुओं के अस्तित्व का परिचय देने में सफल रहे, लेकिन वैज्ञानिक उपकरणों की कमी के कारण वे आगे विकसित नहीं हो सके। साथ ही, परमाणुओं के संबंध में कणाद के निष्कर्ष आधुनिक विज्ञान के निष्कर्षों के समान ही दिखाई देते हैं । वैशेषिक भौतिक वस्तुओं की बहुलता और विशिष्टता पर बल देते हैं।

कणाद ने अपने विचारों को उनके द्वारा लिखित वैशेषिक दर्शन नामक पुस्तक के माध्यम से स्थापित किया । उन्हें कई अन्य नामों से जाना जाता है जैसे उलूक , कश्यप आदि। एक किंवदंती है कि कणाद शिव के महान भक्त थे जिनकी कृपा से उनके मन में यह ज्ञान जागृत हुआ। द्रव्य (पदार्थ), गुण (गुणवत्ता), कर्म (क्रिया), सामान्य (समुदाय), विशेश (विशिष्टता) और समवाय (अंतर्निहित) कणाद द्वारा शुरू की गई छह श्रेणियां हैं। कणाद द्वारा बताये गये अभाव के विषय में विद्वानों में भिन्न-भिन्न मत हैं । वैशेषिक दर्शन के उस सूत्र में, जो पदार्थ (श्रेणी) की बात करता है, आभा का शारीरिक रूप से प्रतिनिधित्व नहीं किया गया है। बाद में वैशेषिक के एक प्रसिद्ध विद्वान शिवादित्य मिश्र ने अपने कार्य सप्तपादार्थी के माध्यम से अपनी राय प्रकट की , कि आभा (अस्तित्व) को भी कणाद ने सातवीं श्रेणी के रूप में स्वीकार किया था।

प्रमाण के विषय में वैशेषिक केवल दो को ही स्वीकार करते प्रतीत होते हैं। वे प्रत्यक्ष (धारणा) और अनुमान (अनुमान) हैं। इस समय के विद्वान कणाद और आधुनिक भौतिकी के निष्कर्षों के बीच घनिष्ठ समानता पाते हैं। कणाद का वैशेषिक दर्शन दस

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580 |

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 2, February 2019

अध्यायों में फैला हुआ है। प्रत्येक अध्याय को दो भागों में विभाजित किया गया है जिन्हें आह्निका कहा जाता है । परमाणु सिद्धांत के अलावा कणाद गुरुत्वाकर्षण के नियम को भी समझाने का प्रयास करते नजर आते हैं। जब न्यूटन को यह विचार गिरते हुए सेब से मिला, तो कणाद, जो वैज्ञानिक से बहुत पहले जीवित थे, ने धनुष से छोड़े गए तीर से उनके सिद्धांत को एक रूप दिया। तीर की पहली छलांग निशानेबाज द्वारा प्रेरित प्रयास के कारण होती है। लेकिन गति ही तीर को बाद में चलने के लिए प्रेरित करती है। वेगा (गति) को संस्कार (इंप्रेशन) के रूप में गिना जाता है। कणाद कहते हैं कि जब उत्पन्न गति समाप्त हो जाती है तो तीर जमीन पर गिर जाता है। कणाद कहते हैं कि गुरुत्व (शरीर का भार) के कारण यह गिरता है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार गुरुत्वाकर्षण बल और कुछ नहीं बल्कि शरीर का भार है।

कणाद के वैशेषिक सूत्रों पर कई टिप्पणियाँ लिखी गई हैं । इनमें प्रशस्तपाद की प्रशस्तपादभाष्य नामक टीका , उदयनाचार्य की किरणावली , श्रीधर की न्याय कंडाली अत्यधिक मानी जाती हैं। शंकर मिश्र की उपास्कर एक टिप्पणी है जिसने बहुत लोकप्रियता हासिल की। इस क्षेत्र में काम करने वाले शिक्षकों और छात्रों द्वारा इसका व्यापक रूप से पालन किया जाता है । चंद्रकांता की वृत्ति और टीका भी उल्लेखनीय है।

यद्यपि न्याय और वैशेषिक परस्पर संबंधित हैं, विद्वान इन सिद्धांतों की सटीक तिथि का आकलन करने में भ्रमित हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार वैशेषिक दर्शन न्याय से भी पहले का है। लेकिन बाकी लोग इस मामले में अलग राय रख रहे हैं. सोलह श्रेणियों को स्वीकार करने वाले नैयायिकों से उनकी राय के लिए समर्थन मांगा जाता है क्योंकि वैशेषिकों की उस स्थान पर केवल छह या सात श्रेणियां हैं। शताब्दी के मध्य तक हुआ होगा। आध्यात्मिक पक्ष पर कुछ मतभेदों के बावजूद, दोनों प्रणालियों के लगभग सभी विचारों की प्रकृति एक समान है । वेदांतियों के विपरीत, ये दोनों प्रणालियाँ वैदिक विचारों और अवधारणा के प्रति उचित सम्मान के साथ सोचने का एक तर्कसंगत तरीका दिखाती हैं। उन दिनों विज्ञान को दर्शाने के लिए तंत्र या शास्त्र का उपयोग किया जाता है। न्याय और वैशेषिक को समानतंत्र कहा जाता है क्योंकि ये दोनों विज्ञान साथ-साथ चलते हैं।[1,2]

परिणाम

प्राचीन भारत का वैदिक साहित्य इतना व्यापक है कि किसी भी वेदपाठी या वेदज्ञानी के लिए उन्हें पूरी तरह समझना और स्मरण रखना कठिन कार्य है। वेदों में ईश्वर या परम ब्रह्म के बारे में और सृष्टि की उत्पत्ति के बारे में काफी कुछ कहा गया है। इनमें दर्शन एवं विश्व-विज्ञान निहित है। प्रारंभ में ये मौखिक विधा थी और श्रवण-स्मरण के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती थी परंतु ऐसा माना जाता है कि विभिन्न ऋषियों ने 1200 ईसापूर्व वेदों को लिपिबद्ध किया। उसके 400 वर्ष बाद, लगभग 800 ईसापूर्व उपनिषदों एवं दर्शनशास्त्रों में उन वेदों की व्याख्याएं की गई हैं।

दर्शनशास्त्र क्या है ? शब्दकल्पद्रुप के अनुसार, "दृश्यते यथार्थतत्वम अनेन इति। यथार्थ तत्व अर्थात ईश्वर या परम ब्रह्म के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए जिन ग्रंथों में पथ सुझाया गया है, वह दर्शन है। न्यायकोश के अनुसार, "तत्वज्ञानसाधनं शास्त्रम। तत्व ज्ञान को प्राप्त करने का साधन ही दर्शन है। वेदवाक्य है, "तत्वमसि अर्थात तत त्वम असि या वही तू है। जो आपके लिए दूसरा है, वस्तुत: वही आप हैं।

12वीं शताब्दी में हरिभद्राचार्य ने 'षडदर्शनसमुच्चय नामक एक व्याख्या लिखी। इसमें 6 दर्शन का उल्लेख है। इनमें 3 वैदिक और 3 अवैदिक दर्शनों की चर्चा है। अवैदिक दर्शनों में चार्वाक, बौद्ध और जैन दर्शन हैं। वैदिक दर्शनों में न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योग और मीमांसा-वेदांत शामिल हैं। इनका संकलन या लेखन ईसापूर्व 450 से 250 वर्ष के दौरान माना जाता है। इस प्रकार भारतीय वैदिक दर्शन शास्त्र में 6 मुख्य सूत्र और उनके प्रणेता इस प्रकार माने जाते हैं।

1. न्याय सूत्र : महर्षि गौतम
2. वैशेषिक दर्शन : ऋषि कणाद
3. सांख्य दर्शन : भगवान कपिल

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580 |

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 2, February 2019

4. योग सूत्र : ऋषि पतंजलि
5. पूर्व मीमांसा : जैमिनी ऋषि
6. उत्तर मीमांसा या ब्रह्मसूत्र या वेदांत दर्शन : भगवान वेदव्यास

ऋग्वेद के समय से ही भारतीय दर्शन की दो धाराएं हैं। एक प्रज्ञा-आधारित और दूसरी तर्क-आधारित। उपनिषद काल में इन दोनों धाराओं का संगम पाया जाता है। ये 6 दर्शन शास्त्र दो-दो के जोड़े में तीन वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योग एवं मीमांसा-वेदांत।

भगवान वेदव्यास और उनके शिष्य जैमिनी ऋषि ने वेदों को सही ढंग से समझाने के लिए 'पूर्व मीमांसा और 'उत्तर मीमांसा या 'वेदांत या 'ब्रह्मसूत्र लिखे जो प्रज्ञा-आधारित हैं। शेषचारों पूर्णतया तर्क-आधारित हैं। न्याय सूत्र एवं वैशेषिक दर्शन में सृष्टि का मूल कारण अणुओं का मिश्रण माना गया है। उन्होंने अणुओं से निर्मित तत्वों, उनकी विशेषताएं तथा उनके अंतर्संबंध की व्याख्या प्रस्तुत की है। सांख्य-योग सूत्र में प्रकृति और पुरुषके द्वैतवाद को मान्यता दी गई है। सांख्य दर्शन में ब्रह्म द्वारा माया से उत्पन्न संसार एवं उससे परे दिव्यता के बारे में व्याख्या की गई। इसमें समझाया गया कि संपूर्ण संसार माया से उत्पन्न है और उससे मोह न कर, उससे परे दिव्यता प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि वही परमानंद का स्रोत है। योग सूत्र में अज्ञान, अहंकार, मोह, घृणा और मृत्युभय से मन को दूर रखकर सुख प्राप्त करने तथा प्राण ऊर्जा के माध्यम से मन एवं काया को शुद्ध रखकर मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग बताया गया है। पूर्व मीमांसा में मनन-चिंतन के माध्यम से वेदों की उचित व्याख्या की गई है। यह ईश्वर प्राप्ति पर प्रकाश नहीं डालता परंतु धर्म पथ के माध्यम से जीवन में सुख पाने का मार्ग बताता है। उत्तर मीमांसा (वेदांत या ब्रह्मसूत्र) में यह गुप्त रहस्य उदघाटित किया गया है कि ब्रह्म ही पूर्ण है, दिव्य है और सत, चित्त व आनंद है। वह कृपालु है अत: माया का बंधन छोड़कर उसे सदैव स्मरण रखिए, प्रेम करिए और समर्पणभाव रखिए। उसकी कृपा का अनुभव कर सदैव पूर्ण परमानंद में रहिए। यही इन 6 दर्शन शास्त्रों का सार है।[1]

18 पुराणों में से एक ब्रह्मवैवर्त पुराण में उल्लेख है :-

शिव: कणादमुनये गौतमाय ददौमुने। सूर्यष्च याज्ञवल्क्याय तथा कात्यायनाय च।।

षेश: पाणिनये चैव भरद्वाजाय धीमते। ददौ षाकटायनाय सुतले बलिसंसदि।। (ब्र.वै.प्रकृति 457,58)

एतसिमन्नन्तरे ब्रह्मन्ब्राहमणा âश्टमानसा:। आजग्मु: ससिमता: सर्वे ज्वलन्तो ब्रह्मतेजसा।।

अंगिराष्च प्रचेताष्च ऋतुष्च भृगुरेव च। पुलहष्च पुलस्त्यष्च मरीचिष्चात्रिरेव च।।

सनकष्च सनन्दष्च तृतीयष्च सनातन:। सनत्कुमारो भगवान्साक्षान्नारायणात्मक:।।

कपिलष्चासुरिष्चैव वोढु: पंचषिखस्तथा। दुर्वासा: कष्यपो·गस्त्यौ गौतम: कण्व एव च।।

और्व: कात्यायनष्चैव कणाद: पाणिनिस्तथा। मार्कण्डेयो लोमशष्च वसिश्ठो भगवान्स्वयम।।

(ब्र.वै.गणपति 2311-15)

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580 |

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 2, February 2019

प्रथम दो श्लोकों में कहा गया है कि कणाद, गौतम, याज्ञवल्क्य, कात्यायन, पाणिनी, भारद्वाज एवं शाकटायन समकालीन ऋषि थे। अन्य 5 श्लोकों में 28 ऋषियों के नाम गिनाए गए हैं जिनमें कणाद, गौतम आदि ऋषियों के भी नाम हैं। ये ऋषि तत्समय के वैज्ञानिक थे जो विभिन्न विषयों पर शोध करते थे। यह माना जाता है कि दर्शन शास्त्र के ये 6 सूत्र लिखने वाले ऋषि लगभग समकालीन थे।

आचार्य कणाद – परमाणु सिद्धांत के प्रवर्तक

पदमपुराण में कहा गया है –

कणादेन तु सम्प्रोक्तं शास्त्रम वैशेषिकम महत।

गौतमेन तथा न्यायं सांख्यम तु कपिलेन वै ।।

इन छ: शास्त्रों में से एक वैशेषिक दर्शन के रचियता आचार्य कणाद हैं। उलूक ऋषि के पुत्र होने के कारण उन्हें औलुक्य भी कहा जाता है। कुछ विद्वान उनका मूल नाम कष्यप बताते हैं। उन्हें ईसा पूर्व 200 के काल में कणभुक या कणभक्ष के नाम से भी जाना जाता था। वायु पुराण के अनुसार उनका जन्म ईसा पूर्व 600 के आसपास गुजरात के द्वारिका में प्रभास क्षेत्र में हुआ था। यह 600 ईसापूर्व का समय वह काल था जब भारत श्रेष्ठ गुणवत्तायुक्त स्टील का उत्पादक था जिसे चीन, रोमन और मिस्र साम्राज्य में इसे ऊँचे मूल्य पर निर्यात किया जाता था। चीनियों ने ऐसा स्टील बनाने के लिए शताब्दियों तक प्रयास किए परंतु वे सफल नहीं हुए। इसी स्टील और इसके अलावा साँचों, भारतीय मसालों और अन्य उत्पादों के लिए रोमनवासियों ने जर्मन-आदिवासियों को भारत में गुलाम बनाकर बेचा। इन्हीं वस्तुओं के कारण सिकंदर ने भारत को जीतना चाहा परंतु असफल रहा। इसी प्राचीन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के युग में कणाद आदि हुए।

कणाद के पिता उलूक ऋषि ने अणु ज्ञान को प्रतिपादित किया था परंतु उसे व्यवस्थित ढंग से औलुक्य अर्थात कणाद ने प्रकाशित किया। वे रसवादम अर्थात पदार्थ विज्ञान, कारण-परिणाम विज्ञान और परमाणु सिद्धांत के प्रणेता थे। आचार्य सोम शर्मा को उनका गुरू माना जाता है। कणों पर अनुसंधान करने के कारण ही उनका नाम कणाद हुआ। ऐसी किवदंती है कि कणाद एकदम कुरूप थे और उनसे किशोरियाँ डर जाती थीं। अत: वे रात्रि में ही बाहर निकलते थे और धान्यागारों में से चोरी-छिपे अन्न खाते थे। एक बार वे अपने हाथ में भोजन लेकर चल रहे थे। अनायास ही उन्होंने उस भोजन को कुतर-कुतर कर फेंकना शुरू कर दिया। इस प्रक्रिया में उन्होंने देखा कि अन्नकण छोटे-छोटे कणों में विभाजित हो रहे हैं। वे उन्हें और विभाजित करते गए। इसी प्रक्रिया में उन्हें यह विचार आया कि अंतत: ऐसे सूक्ष्म कण होते हैं जिन्हें विभाजित नहीं किया जा सकता। उन्होंने इसे 'कण शब्द दिया। एक किंवदंती और है कि भगवान शिव ने उन्हें उल्लू के वेश में यह ज्ञान दिया था।

कुछ विद्वानों की राय है कि वैशेषिक दर्शन सांख्य दर्शन से पूर्व रचित है। उनका तर्क सांख्य के निम्न सूत्र पर आधारित है:-

न वयं शतपदार्थवादिनो वैशेषिकादिवत।

कणाद ऋषि ने विश्व में पहली बार यह प्रतिपादन प्राचीन यूनान (ग्रीस) के डेमोक्रिटस से एक शताब्दी पूर्व तथा जान डाल्टन से लगभग 2500 वर्ष पूर्व किया था। उनकी शोध मुख्यत: निगमन विधि अर्थात अनुमान-तर्क के माध्यम से सृष्टि की विविधता से लेकर तत्व के प्राकट्य की मूल प्रेरणा तक की प्रक्रिया का अध्ययन कर, भौतिक जगत के मूल का पता लगाने का प्रयास है। कणाद ने शब्द की उत्पत्ति एवं विनाश का सिद्धांत दिया है। विलक्षण बात यह है कि यह शोध आज की बिग बैंग थ्योरी से पूर्व का प्राचीन वैदिक सिद्धांत है। कणाद ने परमाणु के आयाम व गति तथा आपसी रासायनिक प्रतिक्रियाओं के बारे में भी वर्णन किया है। उनका परमाणु सिद्धांत वास्तव में तर्क-आधारित है, न कि व्यकितगत अनुभव आधारित या प्रयोग-सिद्ध। इसे भारतीय दर्शन में सार रूप में तथा दर्शन-आध्यात्म के जाल में बुन कर प्रस्तुत किया गया है। बाद में महर्षि गौतम ने अपने न्याय (तर्क) शास्त्र में भी कणाद के ही सिद्धांतों पर आस्तिकवादी शोध प्रस्तुत किया है। यह भी माना जाता है कि बौद्ध और जैन ग्रंथों में भी इसी सिद्धांत को नास्तिकवादी

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580 |

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 2, February 2019

व सापेक्षवादी दिशा में प्रस्तुत किया गया है। न्याय-वैशेषिक दर्शन द्वैतवादी सिद्धांत हैं जो न तो अनुभव की विविधता के आधार एक सार्वत्रिक सिद्धांत प्रस्तुत करता है और न ही मात्र सामान्य या निरपेक्ष विचारों के तार्किक सामंजस्य के आधार पर अनुभव के प्रत्यक्ष तथ्यों को नकारता है। यह अनुभव के प्रत्यक्ष बोध के आधार पर सत्व या अस्तित्व को स्वीकार करता है।

प्रसिद्ध इतिहासकार टी.एन. कोलब्रुक के अनुसार, "यूरोपीय वैज्ञानिकों की तुलना में कणाद एवं अन्य भारतीय ऋषि (वैज्ञानिक) इस क्षेत्र में विश्वगुरू थे। The eminent historian, T.N. Colebrook, has said, "Compared to the scientists of Europe, Kanad and other Indian scientists were the global masters of this field."

आस्ट्रेलिया के एक जानेमाने अनुभवी भारतविद मि. ए.एल. बाशाम के शब्दों में, "भारतीय दर्शन संसार के भौतिक ढांचे का जबरदस्त काल्पनिक स्पष्टीकरण है और यह बहुत हद तक आधुनिक भौतिकी की खोजों से मेल खाता है।

In the words of A.L. Basham, the veteran Australian Indologist "they were brilliant imaginative explanations of the physical structure of the world, and in a large measure, agreed with the discoveries of modern physics."

लेखक दिलीप एम. साल्वी के अनुसार, "यदि कणाद के सूत्रों का विश्लेषण किया जाए तो ज्ञात होगा कि उनका परमाणु सिद्धांत यूनानी दार्षनिकों ल्यूसिप्पस और डेमोक्रिटस द्वारा प्रतिपादित ज्ञान की अपेक्षा ज्यादा प्रगत था।

According to author Dilip M. Salwi, "if Kanada's sutras are analysed, one would find that his atomic theory was far more advanced than those forwarded later by the Greek philosophers, Leucippus and Democritus."

वैशेषिक दर्शन

कणाद ऋषि के दर्शन के लिए "वैशेषिक शब्द का प्रयोग किया जाता है क्योंकि उन्होंने अणु की विशेषताओं का वर्णन किया है। वैशेषिक दर्शन सूत्र को तर्क-विज्ञान की श्रेणी में माना जाता है। वैशेषिक सूत्र का प्रत्यक्ष प्रयोजन धर्म की व्याख्या करना है और इसके अनुसार धर्म वह है जिससे अभ्युदय (उत्पत्ति या समृद्धि) और नि:श्रेयस (मोक्ष या विनाश) का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसमें अनुमान तथा हेत्वाभास के तीन प्रकारों का उपयोग किया गया है। आरंभिक वैशेषिक ज्ञान-मीमांसा में अणु-परमाणु संबंधी ज्ञान को प्रत्यक्ष बोध और अनुमान विधियों द्वारा विश्लेषण किया गया है जबकि न्याय सूत्र में अनुमान विधि में उपमान एवं शब्द को भी शामिल किया गया है। निगमन विधि द्वारा तर्क करने की प्रक्रिया वैशेषिक और न्याय दोनों सूत्रों में समान है।

किसी पदार्थ के गुण-धर्म जब इन्द्रियों के संपर्क में आते हैं तो उसे प्रत्यक्ष बोध कहते हैं जैसे किसी वस्तु का रंग देखना। तर्क द्वारा विचारित अवधारणा को अनुमान कहा जाता है। यह दो प्रकार का होता है- दृश्ट (जिसे देखा जा सकता है) व अदृश्ट (जिसे देखा नहीं जा सकता)। जिसे वर्णित नहीं किया जा सकता वह अदृश्ट है। यद्यपि इसे वर्णन नहीं किया जा सकता, फिर भी उसे स्वीकार किया जाता है क्योंकि अदृश्ट का महत्व भी कम नहीं आँका जा सकता। अदृश्ट को यदि नहीं स्वीकारें तो इसका अर्थ यह हुआ कि काया और इन्द्रियों के संपर्क को भी नहीं माना जा रहा, फलत: संज्ञान को भी अस्वीकार किया जा रहा है। कणाद ने चुंबकीय आकर्षण, अणुओं का आरंभिक संवेग, किसी भी पदार्थ का नीचे की ओर गिरना आदि अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए अदृश्ट का व्यापक उपयोग किया है। जैसे –

अग्नेयध्वज्वलनं वायोसितर्यक्पवनमणूनां मनसष्वशध्यं कर्मादृश्टकारितम।।5.2.13।।

अर्थात अग्नि की आरंभिक ऊपर उठती ज्वाला, वायु का आरंभिक वेग और अणु व मन का आरंभिक गमन, इन सबका कारण अदृश्ट है।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580 |

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 2, February 2019

कणाद ऋषि ने वैशेषिक सूत्र में अणुवाद का समर्थन किया गया है तथा भौतिक संसार की प्रत्येक वस्तु को एक निश्चित संख्या के अणुओं में विभक्त होने की अभिधारणा दी है। कणाद ने व्याख्या की है कि सृष्टि के सभी पदार्थ सूक्ष्म कणों से बने हैं जो और अधिक विभाजित नहीं हो सकते। ये परमाणु सूक्ष्मतम, अदृश्य, रासायनिक रूप से अविभाज्य और शाश्वत अर्थात नश्वर होते हैं। परमाणु मिलकर एक तत्व बनाते हैं। ये सूक्ष्म कण उत्पाद या परिणाम नहीं हैं बल्कि कारण हैं। कणाद के अनुसार, "कारण न होने पर परिणाम या कार्य भी न होगा परंतु परिणाम या कार्य न होने का अर्थ यह नहीं है कि कारण नहीं है। अर्थात परिणाम हो या न हो, कारण का अस्तित्व तो हो सकता है। उन्होंने अपने दर्शन को अनास्तिक के रूप में प्रस्तुत किया है परंतु साथ ही अदृश्ट अर्थात अज्ञात कारण जिसके द्वारा ये असंख्य सूक्ष्म अणु मिलकर पदार्थों का निर्माण करते हैं, का सिद्धांत प्रस्तुत किया है। बाद में व्याख्याकारों ने इस अज्ञात कारण को ईश्वर ही माना है। इस दर्शन में सृष्टि के समस्त पदार्थों को 9 भागों में वर्गीकृत किया गया है यथा भूमि, जल, प्रकाश, वायु, तेज या अग्नि, समय, आकाश आत्मा तथा मन। इनके गुण एवं कर्म दोनों सामान्य व विशेष हो सकते हैं परंतु सामान्य होते हुए भी परमाणुओं का अलग-अलग प्रकार से संलयन होने से वे एक दूसरे से भिन्न पाए जाते हैं और विशिष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार पदार्थों की विशेषता का वर्णन करने से उनका सूत्र वैशेषिक कहलाया।

कणाद और उनके बाद के वैशेषिक दर्शनवेत्ता आधुनिक विज्ञान के परमाणु सिद्धांत से भिन्न मत रखते थे। उनका दावा था कि अणुओं की कार्यप्रणाली परम ब्रह्म की इच्छा से नियंत्रित होती है। अत: उनके अनुसार हर प्रकार के अणुओं का संलयन एवं विखंडन एक जैसी क्रिया न करके कभी कभी अपवादस्वरूप क्रिया भी कर सकता है। यह अणुवाद या परमाणु विज्ञान का आस्तिकवादी स्वरूप था।

वैशेषिक दर्शन का शोध-प्रबंध दस अध्यायों में विभाजित है। प्रत्येक अध्याय में दो अन्हिकाएं हैं। कुल 370 सूत्र हैं। वैशेषिक के विभिन्न अध्यायों में 1. सूक्ष्मकण या परमाणु सिद्धांत के बारे में वर्णन 2. द्रव्यत्व, गुणत्व एवं कर्मत्व 3. द्रव्यों के गुणों का वर्णन 4. द्रव्यों के कर्म पर जैसे आत्मा के संपर्क में आने पर हाथ का संचालन होता है, हाथ के संपर्क से मूसल को उठाया जा सकता है, मूसल से ओखली में मारा जा सकता है, परंतु ओखली में मारना हाथ के संपर्क के कारण नहीं बल्कि मूसल के कारण, इसी प्रकार मूसल को उठाना आत्मा के कारण नहीं, बल्कि हाथ के कारण है। हाथ से न उठाने पर भी मूसल गुरूत्व के कारण यदि ओखली में गिरती है तो भी ओखली में मार करेगी। 5. द्रव्यों के घटकों का वर्णन 6. काया, इन्द्रियां और विषय – इन तीन रूपों में सृष्टि का अस्तित्व 7. कारण-कार्य संबंधों पर तार्किक चर्चा 8. कारण-कार्य के एकत्व और पृथकत्व का वर्णन 9. नित्य व अनित्य का वर्णन। जो अस्तित्व में है परंतु उसका कोई कारण नहीं है, उसे नित्य माना जाता है। जब हम अनित्य की बात करते हैं तो भी हम नित्य का अस्तित्व तो स्वीकार करते ही हैं। अत: अनित्य अविधा अर्थात अज्ञान है। 10. आत्मा के अस्तित्व का अनुमान क्योंकि कुछ द्रव्यों में इन्द्रियों और उनके विषयों के संपर्क में आने से ज्ञान उत्पन्न होता है। 11. मन और आत्मा के बारे में वर्णन कि ये अवबोधन-योग्य नहीं हैं बल्कि इनके संपर्क में आने पर द्रव्यो में गुण, कर्म, सामान्यता, विशेषता का अवबोध होता है। 12. कुछ भौतिक लक्षणों का बिल्कुल अपक्व स्पष्टीकरण, जिसका दर्शन के रूप में कोई महत्व नहीं है। 13. चमत्कार या सिद्धियाँ सहानुभूति से प्राप्त नहीं होतीं बल्कि वेदाज्ञा एवं वेदानुसार आचरण से प्राप्त होती हैं। 14. असत अर्थात जिसमें न कर्म होता है और न ही गुण, का वर्णन है।

वैशेषिक सूत्र पर प्रथम दो व्याख्याएं रावणभाष्य और भारद्वाजवृत्ति हैं जो अब उपलब्ध नहीं हैं। रावणभाष्य का संदर्भ पदमनाथ मिश्र के किरणावलीभास्कर में और रत्नप्रभा में भी आता है। इसके अलावा व्योम शेखराचार्य की व्योमवती, श्रीधराचार्य (सन 990) की न्यायकांडली, उदयन (सन 984) की किरणावली तथा श्रीवत्साचार्य की लीलावती नामक चार व्याख्याएं भी हैं। इनके अतिरिक्त नवद्वीप के जगदीश भटटाचार्य एवं शंकर मिश्र (सन 1425) ने प्रशस्तपाद के भाष्य पर दो टीकाएं लिखीं- भाष्यसूक्ति और कणाद-रहस्य। शंकर मिश्र ने वैशेषिक सूत्र पर उपस्कर नाम से भी एक व्याख्या लिखी है।

वैशेषिक दर्शन के अनुसार जगत या सृष्टि की वे समस्त वस्तुएं जिनका अस्तित्व है, जिनका बोध हो सकता है, और जिन्हें पदार्थ की संज्ञा दी जा सकती है, उन्हें 6 वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। द्रव्य, गुण, कर्म (सक्रियता), सामान्य, विशेषतथा समवाय (अंतर्निहित)। ये 6 स्वतंत्र वास्तविकताएं अवबोध द्वारा अनुभव की जा सकती हैं। बाद में वैशेषिक के भाष्यकारों यथा श्रीधर, उदयन एवं शिवादित्य ने एक और वर्ग इसमें जोड़ा- अभव (अनास्तित्व)। प्रथम तीन वर्गों को अर्थ (जिसका बोध किया जा सकता है) माना जाता है। इनके अस्तित्व का वास्तव में अनुभव किया जा सकता है। अंतिम तीन वर्गों को बुध्यापेक्षम (बुद्धि से निर्णीत) माना जाता है। ये तार्किक वर्ग हैं।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580 |

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 2, February 2019

1. द्रव्य या भूत : सभी 6 वर्गों में द्रव्य को आश्रय माना गया है जबकि शेष 5 वर्ग आश्रित माने गए हैं। द्रव्य 9 प्रकार के माने गए हैं।

पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाशं कालो दिगात्मा मन इति द्रव्याणि।।1.1.5।।

1. भूमि या पृथ्वी 2. जल 3. तेज या अग्नि 4. वायु 5. आकाश 6. काल या समय 7. दिक् या अंतरिक्ष 8. आत्मा और 9. मन।

कणाद ने इन्हें निगमन तर्क के आधार पर यौगिक से मूल के क्रम में रखा है जबकि महर्षि महेश योगी ने इन्हें उल्टे क्रम में रखा है- मूल से यौगिक की ओर। इससे सृष्टि के सृजन को समझने में सुविधा होती है। प्रथम 5 को भूत कहा जाता है क्योंकि इन द्रव्यों में कुछ विशिष्ट गुण होते हैं अत: बाहय इन्द्रियों में से किसी भी एक द्वारा इनके अस्तित्व का अनुभव किया जा सकता है। जबकि शेष अभौतिक हैं। पंच भूतों में से भी प्रथम चार पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु परमाणु से निर्मित होते हैं जबकि आकाश अपरमाण्विक व अनंत माना गया है। दिक् और काल को अनंत तथा शाश्वत माना गया है।

2. गुण : वैशेषिक सूत्र में 17 गुणों का वर्णन है। इसमें प्रशस्तपाद ने 7 और जोड़े हैं। मूल 17 गुण इस प्रकार हैं- रूप अर्थात रंग, रस अर्थात स्वाद, गंध, स्पर्श, संख्या, परिमिति या परिमाण (मापन या आकार), पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व (पहले होने की स्थिति), अपरत्व (बाद में होने की स्थिति), बुद्धि, सुख, दुख, इच्छा, द्वेषऔर प्रयत्न। इनमें प्रशस्तपाद ने गुरूत्व, द्रवत्व, स्नेहन (चिकनाई), धर्म (गुण या योग्यता), अधर्म (दोश), शब्द तथा संस्कार (वेग, स्थिति-स्थापक या लोचषीलता जिसके द्वारा पदार्थ भले ही विकृत होकर किंतु अपनी पुरानी स्थिति में आ जाता है व भावना अर्थात आत्मा का वह गुण जिसके द्वारा पदार्थ निरंतर संचालित होते हैं या जिसके द्वारा अनुभूत पदार्थों की स्मृति रहती है और उन्हें पहचाना जाता है।) और जोड़ दिए। द्रव्य अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखता है परंतु ये गुण स्वतंत्र नहीं रह सकते। ये द्रव्य में ही निहित होते हैं और द्रव्य में अन्य गुण या कर्म उत्पन्न करने का कारण बनते हैं। अत: गुण द्रव्य का स्थायी लक्षण होता है। प्रथम पंचगुण पंचतत्वों के कारण हैं। संख्या अपेक्षाबुद्धि के कारण है अर्थात हमारी बुद्धि इसका निर्णय करती है। आकाश, काल, दिक, आत्मा और मन का परिमाण शाश्वत या नित्य माना जाता है जबकि अन्य का अनित्य। पृथकत्व से पदार्थ में भिन्नता का गुणबोध होता है जबकि संयोग और विभाग से वस्तुओं के संबंधित व असंबंधित होने का गुणबोध होता है। परत्व और अपरत्व गुणों से दीर्घ व लघु काल, पास और दूर का बोध होता है। अन्य गुण बुद्धि, सुख, दुख, इच्छा, द्वेषऔर प्रयत्न आत्मा के सापेक्ष होते हैं।[2]

मानव शरीर पंचभूतों से निर्मित कहा जाता है। उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ भी 5 मानी गई है। इन पंचभूतों, पंच ज्ञानेन्द्रियों और उनके गुणों का संबंध इस प्रकार माना गया है :-

ज्ञानेन्द्रियाँ	गुण	पंच महाभूत जिनमें ये गुण पाए जाते हैं
कर्ण	शब्द	पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश
त्वचा	स्पर्श	पृथ्वी जल अग्नि वायु
नेत्र	रूप	पृथ्वी जल अग्नि
जिह्वा	रस	पृथ्वी जल
नासिका	गंध	पृथ्वी

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580 |

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 2, February 2019

3. कर्म : यहाँ कणाद ने कर्म का अर्थ पदार्थ या द्रव्य का संचलन माना है। कणाद का मानना था कि द्रव्य और गुणों के कारण कर्म हो सकता है परंतु कर्म स्वत: ही अन्य कर्म का कारण नहीं हो सकता। अत: गुण की भांति कर्म का भी अपना अलग अस्तित्व नहीं है। कर्म अलग-अलग द्रव्यों में अलग-अलग होते हैं। दूसरे शब्दों में कर्म एक द्रव्य से संबंध रखता है, न कि कई द्रव्यों से। गुण तो द्रव्य का स्थायी लक्षण हो सकता है परंतु कर्म शाश्वत या नश्वर प्रकृति का होता है। आकाश, काल, दिक तथा आत्मा हालांकि पदार्थ माने गए हैं परंतु वे कर्म से रहित या मुक्त होते हैं। कर्म 5 प्रकार के माने गए हैं- उत्क्षेपन, अवक्षेपन, आकुंचन, संप्रसरण, गमन।

4. सामान्य या जाति : द्रव्य बहुसंख्या में पाए जाते हैं अर्थात उनका बहुवचन होता है, इसलिए उनके समूह या उस वर्ग के सदस्यों के बीच समानता का संबंध होता है। जब कोई गुण-धर्म कई पदार्थों में एक समान पाया जाता है तो वे सामान्य कहलाते हैं। इसलिए द्रव्यों में वर्ण या रंग का अंतर होने पर भी वे एक ही जाति या वर्ग के हो सकते हैं। सभी पदार्थों में समस्त विविधता के बावजूद उन्हें सत या अस्तित्वयुक्त माना जाता है। यह सामान्यता द्रव्य, गुण और कर्म स्तर पर पाई जाती है। सामान्य को द्रव्य, गुण व कर्म में एक अलग स्वतंत्र अस्तित्व माना जाता है।

5. विशेष: कोई द्रव्य अन्य से भिन्न है तो वह विशेष है। इस बाहय जगत से हम जो भी अनुभूति पाते हैं वह अन्य से भिन्न होती है। यह भिन्नता उनके अणुओं के कारण होती है। अणुओं में अंतर होता है क्योंकि उनमें परमाणु असंख्य समुच्चयों में होते हैं अत: कुछ द्रव्य विशेष होते हैं।

6. समवाय : समवाय का अर्थ है कि किस प्रकार एक विशेषद्रव्य सामान्य द्रव्य का ही भाग है। कणाद ऋषि ने समवाय को कारण व परिणाम का संबंध माना है। समवाय के आधार पर तर्क-आधारित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। प्रशस्तपाद ने इसे परिभाषित करते हुए बताया है कि जो पदार्थ अविचिछन्न व एक से दूसरे संबंद्ध होते हैं, उनमें धारक और धारित के बीच का संबंध समवाय है। जैसे द्रव्य और उनके गुण, द्रव्य और उनके कर्म, द्रव्य और सामान्य, कारण एवं कार्य (परिणाम)। ये एक प्रकार एकमेव दिखते हैं जैसे वे अभिन्न अर्थात एक ही हों। परंतु यह संबंध अलग एवं स्वतंत्र अस्तित्व रखता है। यही समवाय है। इसमें धारक या धारित नष्ट हो सकता है परंतु समवाय संबंध हमेशा रहता है। समवाय का संबंध बोधात्मक नहीं है, अपितु पदार्थों के बीच जो अविचिछन्न संबंध है, उससे तर्कसाध्य है। वैशेषिक सूत्र में माना गया है कि प्रत्येक कार्य (परिणाम) नवसृजन होता है या नई शुरूआत होती है। अत: इसमें कारण से पूर्व कार्य (परिणाम) के अस्तित्व को नकारा गया है।

परमाणु सिद्धांत

आरंभिक वैशेषिक दर्शन में यह माना गया कि चार भूत यथा पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु अविभक्त परमाणुओं से बने हैं और ये परमाणु आपस में जुड़े रहते हैं। त्रयसरेणु अर्थात खिड़की के छिद्र में से आती प्रकाश किरण में दिखने वाले धूल-कणों को सबसे महत कण माना गया है और उन्हें त्रयणुक कहा गया है। इनका निर्माण तीन भागों से हुआ है। प्रत्येक भाग को द्वयणुक कहा गया है। ये द्वयणुक दो भागों से निर्मित माने जाते हैं।[3] प्रत्येक भाग को परमाणु कहा गया है। ये परमाणु अदृश्य और शाश्वत होते हैं, जिन्हें न तो सृजित किया जा सकता और न ही नष्ट किया जा सकता परंतु परमाणु आपस में मिलकर दृश्य आकार बन जाते हैं। इसे अणुत्व एवं महत्त्व कहा गया है। प्रत्येक परमाणु में अपनी विशेषता होती है।

आज जिन्हें इलैक्ट्रान कहा जाता है, कणाद ने अपने सिद्धांत में यह शोध प्रकट किया कि उनके एक विशेषव्यवस्थित क्रम से संलयन होने पर तत्व (एलिमेन्टस) बनते हैं। कर्म का मूल कारण वे द्रव्य हैं जिनसे तत्व का निर्माण हुआ है। इस संसार में उत्पन्न सभी पदार्थ सूक्ष्म और अविभाज्य कणों से बने हैं और उन कणों को इलैक्ट्रान कहा जाता है। इलैक्ट्रान में अचर या अकंपित संवेग होता है और उनके आरंभिक कंपित संवेग का कारण अज्ञात है। इन इलैक्ट्रानों की श्रृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया के कारण ऊर्जा उत्पन्न होती है जो तत्व में ऐसे कंपन उत्पन्न करती है कि उनका विनाश होता है।

दूसरे शब्दों में यदि जल से भरे गिलास को इलैक्ट्रान सूक्ष्मदर्शक यंत्र द्वारा देखा जाए तो जल में पृथक-पृथक कणों की संरचना दिखाई देगी। यद्यपि बाहर से जल की अवस्था शांत एवं स्थिर है किन्तु इसकी संरचना में असंख्य अणु परस्पर एक दूसरे से उसी प्रकार धक्का-मुक्की कर रहे हैं जिस प्रकार अचानक आग लगने पर भीड़ भरे सभागार में लोग धक्का-मुक्की करते हैं। अणुओं की इस अनिश्चित उछल-कूद से ही इन्द्रियों द्वारा शरीर में जो उत्तेजनाएं अथवा संवेदनाएं उठती हैं उसी को शरीर का तापमान कहते हैं। इसी प्रक्रिया में जीवाणु तथा विषाणु जैसे अत्यंत छोटे-छोटे जीव इधर-उधर धक्का-मुक्की खाते रहते हैं। सूक्ष्म जगत के इस

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580 |

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 2, February 2019

रोचक कर्म-व्यापार को आधुनिक विज्ञान "ब्राउन का नियम कहता है। वस्तुत: तापमान जब अत्यधिक हो जाता है तो परमाणुओं का अस्तित्व समाप्त हो जाता है और पदार्थ के सभी इलैक्ट्रानिक आवरण छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। परमाणुओं के इस विखंडन के बाद भी पदार्थ का मूलभूत रासायनिक अस्तित्व विधमान रहता है क्योंकि परमाणुओं का नाभिक उसी प्रकार बना रहता है। जब तापमान गिर जाता है तो नाभिक स्वतंत्र इलैक्ट्रान कणों को फिर अपनी ओर खींच लेती है और इस प्रकार परमाणुओं की स्थिति पूर्ववत हो जाती है क्योंकि संपूर्ण प्रक्रिया का संबंध त्रिविध गुणात्मक तरंगों से है जो परस्पर कारण और कार्य की श्रंृखला से जुड़ी हुई है। यही कारण है कि सभी जीवों के चेतन-स्तर तथा उनके गुण-विकास भिन्न-भिन्न हो जाते हैं क्योंकि उनमें गुणात्मक परमाणुओं का संयोजन भिन्न-भिन्न रूप में होता है।[4]

अणुओं की यह हलचल या धक्का-मुक्की अनिश्चित नहीं होती बल्कि पूर्णतया "सार्वभौमिक मन द्वारा नियोजित एवं नियंत्रित होती है क्योंकि तभी कारण और कार्य की श्रृंखला जुड़ सकती है। अत: ताप का उत्कर्ष ही विषमता है, हलचल है, जीवन और स्पंदन है तथा ताप का लोप ही समता अथवा व्यवस्था है। प्रकृति की यह विषमता अथवा हलचल जब तक चलती रहेगी, जगत में यह नाम-रूप परिवर्तन तब तक होते रहेंगे, जीवन एवं मृत्यु का यह खेल तब तक घटित होता रहेगा, जब तक प्रकृति की इस प्रक्रिया को उलट नहीं दिया जाता अथवा कालचक्र को रोक नहीं दिया जाता।

इलैक्ट्रान से काल का मापन भी किया जा सकता है। काल को मापने की सबसे छोटी इकाई इलैक्टान ही है।

कणाद की व्याख्या के अनुसार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि स्थिर एवं अस्थिर दोनों प्रकार के तत्वों के परमाणुओं का विघटन किया जा सकता है जबकि आधुनिक विज्ञान केवल अस्थिर तत्वों जैसे रेडियम, थोरियम, यूरेनियम, प्लूटोनियम आदि के परमाणुओं के विघटन तक ही अनुसंधान कर पाया है। हो सकता है भविष्य का विज्ञान स्थिर तत्वों के परमाणुओं का भी विघटन कर पाए। तब हम लोहे को स्वर्ण भी बना पाएंगे।

कणाद का यह भी मानना था कि गुरूत्व के कारण ही सभी पदार्थ पृथ्वी की ओर आकर्षित होते हैं। अत: इन्हें एक दिशा में या ऊपर की ओर ले जाने के लिए किसी अतिरिक्त कारण या बल की आवष्यकता होती है। कणाद यह भी मानते थे कि शरीर में कई अंग होते हैं और प्रत्येक की अपनी अलग विशेषता होती है क्योंकि उनके भिन्न कारणप्रयोजन होते हैं।

यद्यपि न्याय और वैशेषिक अलग-अलग शास्त्र हैं तथापि उनमें भिन्नताओं से ज्यादा समानताएं पाई जाती हैं। न्याय दर्शन में महर्षि गौतम ने मुख्यत: तर्क से भौतिक ज्ञान एवं आत्मतत्वज्ञान पर अनुसंधान प्रस्तुत किया है। दोनों शास्त्र सत्य एवं अनेकतावादी हैं। दोनों दर्शनों में समवाय (किस प्रकार एक विशेषद्रव्य सामान्य द्रव्य समूह का भाग है) और तर्क-आधारित अनुमान (वह निष्कर्ष जो सामान्य द्रव्य समूह का ज्ञान होने पर एक विशिष्ट द्रव्य के बारे में निकाला जाता है) पर केंद्रित हैं। दो प्रकार के समवाय जिनके माध्यम से तर्क-आधारित सही अनुमान निकाले जाते हैं, वे हैं- जाति उदभवन (द्रव्य समूह, जिनमें प्रतिनिधिक गुण होते हैं) और कारण-कार्य संबंध (काल के अंतर्गत घटनाएं जिनसे एक द्रव्य अन्य द्रव्य में परिवर्तित होता है)। इस प्रकार दोनों में ही –

1. ईश्वर को सृष्टि का मूल कारण माना गया है।
2. भौतिक वस्तुओं का अस्तित्व मन से निरा स्वतंत्र है। यद्यपि उन वस्तुओं का बोध मन पर ही निर्भर करता है जिसमें इंद्रियां सहयोग करती हैं।
3. पदार्थ के सात प्रकार यथा द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभव परम सत्य हैं।
4. केवल द्रव्य ही स्वतंत्र अस्तित्व रखता है, शेष उससे संबंधित होते हैं।
5. मूल द्रव्य 9 हैं – पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, काल, दिक, आत्मा और मन। प्रथम सात द्रव्य से ही भौतिक संसार की रचना होती है। शेष दो अभौतिक हैं।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580 |

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 2, February 2019

6. पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु की मूल संरचना अणुओं से ही होती है। इनके मूल संघटक चार अलग-अलग प्रकार के अणुओं से बनते हैं।
7. आकाश, दिक और काल अनंत और व्यापक होते हैं।
8. आत्मा शाश्वत और व्यापक होती है परंतु मन शाश्वत किंतु अत्यंत सूक्ष्म होता है।
9. आत्माएं असंख्य होती हैं, एक दूसरे से भिन्न होती हैं तथा ज्ञान आत्मा का न तो स्वाभाविक गुण होता है, न ही उसका स्वत्व। शरीर से अलग अस्तित्व में आत्मा को कोई ज्ञान या बोध नहीं होता।
10. आत्मा अज्ञान के माध्यम से मन, अंग और शरीर के सहयोग से बंधी होती है।
11. केवल यथार्थ ज्ञान ही आत्मा को इन बंधनों से मुक्त कर सकता है तथा अपवर्ग अर्थात मोक्ष की प्राप्ति की ओर ले जा सकता है। बिना साक्षात प्राप्ति के यह समस्त पीड़ाओं से पूर्ण मुक्ति की अवस्था है।
12. पुण्य कार्य तथा सत्य भावना ही यथार्थ ज्ञान की ओर प्रवृत्त करते हैं।

कणाद ऋषि के वैशेषिक दर्शन और गौतम रचित न्याय सूत्र में काफी कुछ समान तत्व पाए जाते हैं। दोनों में सांसारिक इच्छाओं का त्याग कर जीवन में सुखी रहने तथा अंतत: ब्रह्म व सत्य का ज्ञान प्राप्त कर मुक्ति का मार्ग बताया गया है। न्याय सूत्र और वैशेषिक दर्शन दोनों शास्त्र प्रश्नोत्तरी के रूप में लिखे गए हैं और अपने आप में माया रचित संसार की असारता तथा पूर्ण ब्रह्म को पाने की प्राकृतिक लालसा को तार्किक ढंग से प्रस्तुत करने वाले पूर्ण विज्ञान हैं। इसमें ब्रह्म को पाकर कर्मों के बंधन से मुक्त होने का मार्ग बताया गया है। वैशेषिक एवं न्याय सूत्र का मुख्य उद्देश्य यह है कि भौतिक जगत में कर्मों के फल के मोह के बारे में ज्ञान देकर परम ब्रह्म को प्राप्त करने की तीव्र लालसा उत्पन्न की जाए। परंतु इन दोनों शास्त्रों में ब्रह्म की प्रकृति, रूप तथा कृपा के बारे में विवरण नहीं है। यद्यपि वैशेषिक दर्शन की रचना और न्याय सूत्र की रचना अलग-अलग स्वतंत्र ऋषियों ने की तथापि दोनों में तत्वमीमांसा संबंधी सिद्धांतों की समानता के कारण दोनों शास्त्रों में समान बातें कही गईं। शास्त्रीय दृष्टि से वैशेषिक दर्शन एक मामले में न्याय सूत्र से भिन्न है। न्याय सूत्र में ज्ञान के चार मार्ग या चार स्रोत माने गए हैं प्रत्यक्ष बोध, निष्कर्ष, तुलना तथा प्रमाण। जबकि वैशेषिक दर्शन में केवल प्रत्यक्ष बोध एवं निष्कर्ष को ही ज्ञान का मार्ग या स्रोत माना गया है। वैशेषिक दर्शन में सृष्टि की प्रकृति का विश्लेषण किया गया है जबकि न्याय दर्शन में तर्क पर अधिक जोर दिया गया है।[5]

भारतीय दर्शन में मूल तत्व सत, रजस एवं तमस माने गए हैं। जगत में समस्त जड़ एवं चेतन इन्हीं तत्वों से परिणत होकर बने हैं। सत को प्रीतिरूप अर्थात दूसरे को अपनी ओर आकृष्ट करने वाला, रजस को अप्रीतिरूप अर्थात दूर हटने की प्रवृतित, अपकर्शित करने वाला और तमस को विषादरूप अर्थात न प्रीतिरूप और न ही अप्रीतिरूप अर्थात उदासीन माना गया है। आधुनिक विज्ञान एवं भारतीय दर्शन में कितनी समानता है। आधुनिक विज्ञान समस्त विश्व का उपादान कारण प्रोटान, इलैक्ट्रान तथा न्यूट्रान नामक तीन प्रकार के तत्वों को मानता है। प्रोटान स्थिर, धनावेषी अर्थात आकर्षण शक्ति का पुंज है जबकि इसके विपरीत इलैक्ट्रान चर यानी अस्थिर, ऋणावेषी अर्थात अपकर्शण-स्वरूप है। तीसरे तत्व न्यूट्रान में ये दोनों लक्षण नहीं होते और स्थिर व अनावेषी होता है अर्थात उदासीन होता है। अत: प्रोटान सत का, इलैक्ट्रान रजस का एवं न्यूट्रान तमस का प्रतीक हुआ।

जिस प्रकार तीनों तत्वों में उपसिथत विभिन्न संख्या अथवा मात्रा में मिश्रण से पदार्थ बनता है उसी प्रकार इनके न्यूनाधिक गुणों के समिमश्रण से युग का निर्माण होता है।

निष्कर्ष

उदयन न्याय-वैशेषिक दर्शन के मूर्धन्य आचार्य थे। ये मिथिला के निवासी थे, जहाँ 'करियौन' नामक ग्राम में इनके वंशज आज भी निवास करते हैं। ये अक्षपाद गौतम से आरंभ होने वाली प्राचीन न्याय की परंपरा के अंतिम प्रौढ़ न्यायियक माने जाते हैं। अपने प्रकांड, पांडित्य, अलौकिक शेमुषी तथा प्रोढ़ तार्किकता के कारण ये 'उदयनाचार्य' के नाम से ही प्रख्यात हैं। इनका आविर्भावकाल दशम शतक का उत्तरार्ध है। इनकी 'लक्षणावली' का रचनाकाल 906 शक (984 ई.) ग्रंथ के अंत में निर्दिष्ट है।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580 |

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 2, February 2019

कृतियाँ

उदयनाचार्य ने प्राचीन न्याय ग्रंथों की भी रचना की है, जिनमें इनकी मौलिक सूझ तथा उदात्त प्रतिभा का पदे-पदे परिचय मिलता है। इनकी प्रख्यात कृतियाँ निम्नलिखित हैं-

1. किरणावली - प्रशस्तपाद भाष्य की टीका
2. तात्पर्यपरिशुद्धि - वाचस्पति मिश्र द्वारा रचित 'न्यायवार्तिक' की व्याख्या तात्पर्यटीका का प्रौढ़ व्याख्यान जिसका दूसरा नाम 'न्यायनिबंध' है।
3. लक्षणावली - जिसमें वैशेषिक दर्शन का सार संकलित है।
4. बोधसिद्धि - जो न्यायसूत्र की वृत्ति है, जिसका प्रसिद्ध अभिधान 'न्यायपरिशिष्ट' है।
5. आत्मतत्वविवेक - जिसमें बौद्ध विज्ञानवाद तथा शून्यवाद के सिद्धांतों का विस्तार से खंडन कर ईश्वर की सिद्धि नैयायिक पद्धति से की गई है। यह उदयन की कृतियों में विशेष प्रौढ़ तथा तर्कबहुल माना जाता है। रघुनाथ शिरोमणि, शंकर मिश्र, भगीरथ ठक्कुर तथा नारायणाचार्य आत्रेय जैसे विद्वानों की टीकाओं की सत्ता इस ग्रंथ की गूढ़ार्थता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।
6. 'न्यायकुसुमांजलि' - यह उदयन की सर्वश्रेष्ठ कृति है, जिसमें ईश्वर की सिद्धि नाना उदात्त तर्कों और प्रोढ़युक्तियों के सहारे की गई है। ईश्वरसिद्धि विषयक ग्रंथों में यह संस्कृत के दार्शनिक साहित्य में अनुपम माना जाता है।[6]

मत का प्रतिष्ठापन

ध्यान देने की बात है कि न्यायमत में जगत् के कर्तृव्य से ईश्वर की सिद्धि मानी जाती है। बौद्ध नितांत निरीश्वरवादी हैं। षड्दर्शनों में भी ईश्वर सिद्धि के अनेक प्रकार हैं। इन सब मतों का विस्तृत समीक्षण कर आचार्य उदयन ने अपने मत का प्रौढ़ प्रतिष्ठापन किया है। इनके विषय में यह किंवदतीं प्रसिद्ध है कि जब इनके असमय पहुँचने पर पुरी में जगन्नाथ के मंदिर का फाटक बंद था, तब इन्होंने ललकार कर कहा था कि निरीश्वरवादी बौद्धों के उपस्थित होने पर आपकी स्थिति मेरे अधीन है। इस समय आप मेरी आवज्ञा भले ही करें। ऐश्वर्य मद मत्तोऽसि मामवज्ञाय वर्तसे। उपस्थितेषु बौद्धेषु मदधीना तव स्थिति:।। सुनते हैं, फाटक तुरंत खुल गया और उदयन ने जगन्नाथ जी के सद्य: दर्शन किए। जगन्नाथ मंदिर के पीछे बनने के कारण किंवदंती की सत्यता असिद्ध है।[१]

संदर्भ

1. ऋषि कणाद का वैशेषिक दर्शन (प्रवक्ता डॉट कॉम)
2. वैशेषिक दर्शन का वैशिष्ट्य
3. देवनागरी में वैशेषिकसूत्र
4. वैशेषिकसूत्रम् (रोमन् लिपि में)
5. पदार्थधर्मसंग्रहः (प्रशस्तपादभाष्य)
6. परमाणु सिद्धांत के असली जनक तो ये हैं... (वेबदुनिया)